بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-13.10.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन तथा ऐतिहासिक घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

मध्यपूर्व ऐशिया में युद्ध के कारण विशेष दुआओं को प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 13 अक्तूबर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल में कुछ घटनाएँ जो बदर के अवसर पर अथवा बदर से वापसी पर पेश आईं उनका वर्णन हो रहा था। उन घटनाओं में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हज़रत आयशा से शादी का भी वर्णन है, इस लिए यहाँ उसका भी वर्णन किए देता हूँ।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ीयल्लाहु अन्हा के निधन के पश्चात एक दिन हज़रत उसमान बिन मज़नून रज़ी. की पतनी ख़ौला सुपुत्री हकीम ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप शादी नहीं करेंगे? आप स. ने फ़रमाया- किस से? ख़ौला ने निवेदन पूर्वक कहा कि यदि आप चाहें तो क्वाँरी भी मौजूद है तथा विधवा भी। आप स. के पूछने पर ख़ौला ने बताया के क्वाँरी तो आयशा सुपुत्री अबू बकर रज़ी. है जबकि सौदा सुपुत्री ज़म्अः हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जाओ तथा उन दोनों के घर वालों से मेरे बारे में बात करो। हज़रत ख़ौला रज़ी. ने पहले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु के घर रिशते से सम्बंधित बात पेश की। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु की अनुमति के बाद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा से निकाह किया। हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि शादी के बाद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें फ़रमाया कि इससे पहले कि मैं तुमसे निकाह करता, तुम मुझे दो बार सपने में दिखाई गईं।

जब हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा की शादी हुई तो आप रज़ी. की कम आयु के विषय में पाखंडियों अथवा दुष्ट लोगों ने कोई आपत्ति न की। यदि आपकी आयु से सम्बंधित कोई ऐसी बात होती तो ये लोग अवश्य आपत्तियों की वर्षा कर देते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत आयशा का नौ वर्ष का होना तो केवल बिना सिर पैर की बातें हैं।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा की विशेषताओं का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि कम आयु होने के बावजूद हज़रत आयशा रज़ी. की स्मरण शक्ति तथा बुद्धि बड़ी प्रखर थी और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा दीक्षा के अंतर्गत उन्होंने अति शीघ्रता के साथ बड़ी तेज़ी से प्रगति की, तथा वास्तव में इस छोटी आयु में उनको अपने घर में ले आने से आप स. इच्छा यही थी कि उनकी तर्बियत कर सकें और ताकि उन्हें आप स. की सेवा में रहने का अधिक से अधिक अवसर मिल सके और आप इस महत्त्व पूर्ण तथा महामान्य कार्य के योग्य बनाई जा सकें जो एक शारअ नबी (धार्मिक कर्मकांड, शरीअत लाने वाले नबी) की पतनी का कत्तव्य होता है। अतः हज़रत आयशा रज़ी. ने मुसलमान महिलाओं की शिक्षा दीक्षा का वह काम किया जिसका उदाहरण विश्व के इतिहास में नहीं मिलता। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों का एक बड़ा तथा अनिवार्य भाग आप रज़ी. की रिवायतों पर आधारित है। आप रज़ी. द्वारा वर्णित रिवायतों की संख्या दो हज़ार दो सौ दस तक पहुंचती है। आप रज़ी. की दीन में विवेकता की यह स्थिति थी कि बड़े बड़े सहाबी भी इस विषय पर आपसे सम्पर्क करते।

आप स. ने एक अवसर पर फ़रमाया कि महिलाओं में सम्पूर्ण योग्य महिलाएँ कम हुई हैं, फिर आपने फ़िरऔन की पतनी आसया तथा मरयम सुपुत्री इमरान का वर्णन किया तथा फ़रमाया कि आयशा को महिलाओं पर वही प्रमुखता है जो सरीद भोजन को अरब के अन्य भोजनों पर है। हज़रत आयशा, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के बाद लगभग 48 वर्ष जीवित रहीं तथा 58 हिजरी रमज़ान के महीने में अपने प्यारे ख़ुदा से जा मिलीं। देहान्त के समय आपकी आयु 68 वर्ष थी।

बदर के बन्दियों में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी हज़रत ज़ैनब के पति अबुल आस बिन रबीअ भी शामिल थे। उन्हें स्वतंत्र कराने के लिए हज़रत ज़ैनब रज़ी. ने मक्का से अपना वह हार भिजवाया जो उनकी शादी के अवसर पर उनकी माता जी हज़रत ख़दीजा रज़ी. ने उन्हें दिया था। आप स. ने वह हार देखा तो अति दुःखी हो गए तथा सहाबियों से फ़रमाया कि यदि तुम उचित समझो तो ज़ैनब के क़ैदी को रिहा कर दो तथा उसका यह हार भी वापस कर दो। सहाबियों ने निवेदन पूर्वक कहा- अवश्य या रसूलुल्लाह ! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबुल आस को इस शर्त के साथ रिहा किया था कि वे मक्का जाते ही अपनी पतनी ज़ैनब को हिजरत की अनुमति देंगे। अबुल आस ने मक्का जाकर ज़ैनब को हिजरत की अनुमति दे दी। कुछ समय पश्चात अबुल आस भी हिजरत करके मदीना आ गए और यूँ पति पतनी पुनः मिल गए।

ख़ुत्बे के दूसरे भाग में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आजकल जो दुनिया के हालात हैं उनके बारे में इस समय मैं दुआ के लिए भी कहना चाहता हूँ। इस युद्ध के कारण अब दोनों ओर से नगर निवासी महिलाएँ तथा बच्चे एवं बूढ़े बिना किसी धार्मिक भेद के मारे जा रहे हैं अथवा मारे गए हैं।

इस्लाम तो युद्ध की स्थिति में भी महिलाओं तथा बच्चों, तथा किसी भी रूप में युद्ध में भाग न लेने वालों को मारने की आज्ञा नहीं देता। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके विषय में अति कठोर निर्देश दिए हैं। दुनिया कह रही है, तथा कुछ यथार्थ भी इस प्रकार के हैं कि इस युद्ध में पहल हम्मास ने की है, इस बात को छोड़ कर कि इस्राईल की सेना पहले कितने ही निर्दोष फ़लिस्तीनियों की हत्या कर चुकी है, मुसलमानों को हर हाल में इस्लाम की शिक्षानुसार अमल करना चाहिए। इसराईल की सेना ने जो किया वह उसका कृत है, इस पर प्रतिक्रिया करने के अन्य तरीक़े हो सकते हैं, यदि कोई उचित रूप में युद्ध की स्थिति है तो वह सेना के साथ हो सकती है, परन्तु महिलाओं तथा बच्चों और निर्दोष लोगों के साथ नहीं।

इस दृष्टि से हम्मास ने जो क़दम उठाया वह ग़लत था, इसके कारण हानि अधिक हुई। जो हम्मास ने किया उसका बदला हम्मास तक रहता तो अच्छा था, परन्तु अब जो इस्राईल की सेना कर रही है वह अत्यंत भयानक कृत है। यूँ लगता है कि यह सिलसिला अब रुकेगा नहीं। इस्राईल शासन का तो यह ऐलान था कि हम ग़ाज़ा को पूर्णतः मिटा देंगे, इसके लिए उन्होंने अत्यधिक बमबारी की तथा पूरे नगर को राख का ढेर ही बना दिया। अब नई स्थिति यह पैदा हुई है कि वे कहते हैं कि एक मिलयन से अधिक लोग ग़ाज़ा से निकल जाएँ। इस पर शुक्रहै कि कुछ मरी मरी सी ही सही, कुछ तो आवाज़ संयुक्त राष्ट्र संघ की निकली है कि यह मानव अधिकारों का उल्लंघन है तथा यह ग़लत होगा। बजाए इसके कि सख़्ती से उसको कहें कि यह ग़लत है, निवेदन ही कर रहे हैं अभी भी। अतएव इन निर्दोष वासियों का जो युद्ध नहीं कर रहे, कोई दोष नहीं। यदि दुनिया इस्राईलो महिलाओं तथा बच्चों को निर्दोष समझती है तो ये फ़लिस्तीन की महिलाएँ तथा बच्चे भी निर्दोष हैं। इन अह्ले किताब की किताब भी यही कहती है कि इस तरह का रक्तपात वैध नहीं। मुसलमानों पर आरोप है कि उन्होंने ग़लत किया तो ये लोग अपने गिरेबानों में भी झांकें।

अतः हमें बहुत दुआ की ज़रूरत है। फ़लिस्तीन के राजदूत ने यहाँ यही लिखा है कि हम्मास एक लड़ाकू दल है, वह शासनिक दल नहीं है, साथ ही उन्होंने यह सवाल उठाया है तथा उनकी यह बात उचित है कि यदि वास्तविक न्याय स्थापित किया जाता तो ये बातें पैदा न होतीं। यदि बड़ी शक्तियाँ अपने दोहरे स्तर न रखें तो ऐसी अशांति तथा ये लड़ाईयाँ कभी न हों। यही बातें मैं इस्लामी शिक्षा की रोशनी में एक लम्बे समय से कह रहा हं परन्तु सामने से कहते हैं कि ठीक है ठीक है, किन्तु अमल करने को तय्यार नहीं हैं। अब पश्चिम की समस्त बड़ी शक्तियाँ न्याय को एक ओर रख कर फ़लिस्तीन पर अत्याचार के लिए एकजुट हो रही हैं तथा हर दिशा से सेनाएँ भिजवाने की बातें हो रही हैं। मीडिया में ग़लत रिपोर्टिंग हो रही है। ये लोग जिसकी लाठी उसकी भैंस के नियम पर चल रहे हैं। जिनके हाथ में विश्व की आर्थिक व्यवस्था है, उन्होंने उनके आगे ही झुकना है। यदि निरीक्षण किया जाए तो लगता है कि बड़ी शक्तियाँ युद्ध भड़काने में लगी हुई हैं, ये युद्ध रोकना नहीं चाहतीं।

प्रथम महा युद्ध के बाद लीग ऑफ़ नेशन्स बनाई गई, परन्तु न्याय न करने के कारण वह असफल हुई तथा द्वित्तीय महा युद्ध हो गया जिसमें सात करोड़ इंसान अपनी जान से गए। फिर संयुक्त राष्ट्र संघ बनाया गया, किन्तु अब उसका भी यही हाल हो रहा है तथा वह भी बुरी तरह असफल हो रहा है। यह बनाया तो इस लिए गया था कि इसके द्वारा न्याय स्थापित किया जाएगा तथा पीड़ितों का साथ दिया जाएगा, युद्धों को समाप्त करने के प्रयास होंगे, परन्तु इन उद्देश्यों का दूर दूर तक पता नहीं है, हर कोई अपने अपने स्वार्थ के लिए प्रयासरत है।

अब जबकि इस अन्याय के कारण युद्ध होगा तो उससे होने वाली हानि का अनुमान एक साधारण आदमी नहीं लगा सकता।

ऐसी अवस्था में मुस्लिम देशों को चाहिए कि होश से काम लें तथा अपने मतभेद मिटा कर एकता स्थापित करें तथा यही दुनिया से उपद्रव को दूर करने का माध्यम हो सकता है। फिर एक होकर तथा न्याय की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पीड़ितों के अधिकार हर एक स्थान पर स्थापित करने के लिए भरपूर आवाज़ उठाएँ। एक होंगे, एकता होगी तो आवाज़ में शक्ति होगी, अन्यथा निर्दोष मनुष्यों के पाणों को नष्ट करने के ये लोग उत्तरदायी होंगे, मुस्लिम देश ज़िम्मेदार होंगे।

मुस्लिम देशों को चाहिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस उपदेश को सदैव अपने सामने रखें कि पीड़ित तथा पीड़ादायक दोनों की सहायता करो। अल्लाह तआला मुस्लिम देशों को बुद्धि दे और ये एक होकर न्याय स्थापित करने वाले बनें, दुनिया की शक्तियों को भी बुद्धि प्रदान करे कि ये दुनिया को लड़ाई में धकेलने के बजाए उसे विनाश एवं हानि से बचाने का प्रयत्न करें। इन बड़ी शक्तियों को याद रखना चाहिए कि यदि तबाही होगी तो ये महा शक्तियाँ भी सुरक्षित नहीं रहेंगी।

हमारे पास तो दुआ का हथ्यिार है, इस लिए हर अहमदी को पहले से बढ़ कर इसके बारे में दुआ करनी चाहिए। ग़ाज़ा में कुछ अहमदी परिवार भी घिरे हुए हैं, अल्लाह तआला उन्हें भी सुरक्षित रखे तथा अन्य सब निर्दोष लोगों को सुरक्षित रखे।

अल्लाह तआला हम्मास को भी बुद्धि दे तथा ये लोग स्वयं अपने ही लोगों पर अत्याचार करने के उत्तरदायी न बनें। किसी जाति की दुशमनी न्याय से दूर करने वाली न हो, यही क़ुर्आन करीम का आदेश है। अल्लाह तआला महा शक्तियों को भी सामर्थ्य दे कि ये न्याय की आवश्कयताओं को पूरा करते हुए शांति स्थापित करने वाली बनें। अल्लाह तआला करे कि हम दुनिया में शांति एवं समृद्धि देखने वाले हों, आमीन।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने दो मृतकों मुकर्रम डाक्टर बशीर अहमद ख़ाँ साहब ऑफ़ लंदन (जनाज़ा हाज़िर) तथा मुकर्रमा वसीमा बेगम साहिबा पतनी डाक्टर शफ़ीक़ सहगल साहब ऑफ़ पाकिस्तान का सद्वर्णन फ़रमाते हुए नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई और मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जों की बुलन्दी के दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131